नेहरू बाल पुस्तकालय

गर्म पहाड़
और अन्य कहानियाँ

डॉ. अनिता भटनागर जैन

चित्र
धीरज सोमबासी

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

9 से 12 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

ISBN 978-81-237-8885-2

पहला संस्करण : 2019 (*शक* 1941)

Garam Pahad Aur Anya Kahaniyan *(Hindi Original)*

₹ 45.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

गर्म पहाड़

“अब हम नानी के घर नहीं जा रहे हैं।” अवनि हाँफते हुए अपने बड़े भाई अथर्व को बताने पहुँची। “शिमला में एक हफ्ते से नलों में पानी नहीं आ रहा। फेसबुक पर भी बाहर से लोगों को शिमला आने के लिए मना कर दिया गया है।”

अथर्व बोला, “पहाड़ों की रानी शिमला का यह हाल हो गया। इस बार तो मामाजी के होटल को भी बहुत नुकसान हो जाएगा। सारे होटल और रेस्तराँ वाले महीनों से गर्मी का इंतज़ार करते हैं कि टूरिस्ट आएँ और आमदनी हो।”

नाश्ते की टेबल पर अवनि मचल रही थी, “मुझे तो कालकाजी से ट्रेन से शिमला जाना है।” मम्मी ने उसे अखबार की फोटो दिखाई, जिसमें लंबी कतारों में लोग प्लास्टिक के डिब्बे-बोतलें लिए पानी मिलने का इंतज़ार कर रहे थे। यह भी समाचार था कि शिमला के पास जंगलों में भीषण आग को बुझाने के लिए एयरफोर्स के हवाई जहाज़ ने पंजाब में नदी से पानी उठाया था।

“अरे नानी के घर में आग लग जाती तो पानी कहाँ से आता? नानी कैसे नहाएँगी? कैसे कपड़े धुलेंगे? नानी के सारे फूल-पौधे तो बिना पानी के मर जाएँगे। ऐसा क्यों हो गया?” अवनि ने प्रश्नों की बौछार लगा दी।

मम्मी ने उसे प्यार से समझाया, “सभी हिल स्टेशन पर पानी की कमी होती जा रही है। बिना योजना के शहर बढ़ रहे हैं, पेड़ कट रहे हैं और बरसात के पैटर्न और जलवायु में बदलाव हो रहा है। अम्मा बताती हैं कि अंग्रेजों ने 25,000 लोगों के लिए शिमला शहर बनाया था और आज दो लाख लोग रहते हैं, एक लाख पर्यटक भी आ जाते हैं।”

अथर्व बोला, “पर मम्मी। यह योजना और पेड़ काटना, यह सब तो मनुष्य ही करता है। हम अपना ही नुकसान क्यों कर रहे हैं?”

चारों तरफ़ हरे-हरे ऊँचे पहाड़ थे। पहाड़ी रोड करीब सूखी हुई नदी के साथ-साथ घूमती जा रही थी। पापा बता रहे थे कि 10 साल पहले जब वे इसी मौसम में अल्मोड़ा गए थे तब तो नदी में बहुत पानी होता था। शिमला के स्थान पर अब अल्मोड़ा जाएँगे।

• • •

सड़क के किनारे वाले घरों में लंबे बालों वाला एक भोटिया कुत्ता दिखा। घरों के छज्जों और लेज पर पुराने तेल के कनस्तर और प्लास्टिक की खाली बोतलों में फ्यूशीमा और एन्ड्रीआ के पौधे लगे दिखे।

सड़क के एक मोड़ के बाद सामने पहाड़ी पर अल्मोड़ा शहर दिखा। जहाँ तक नज़र जाती रंग-बिरंगे मकान-गुलाबी, पीले, बैंगनी, नारंगी, हरे, नीले। लगता जैसे गुड़िया के शहर का पहाड़ हो। घुमावदार चढ़ाई से गाड़ी शहर में पहुँची।

“अरे यहाँ भी लोग छाते लगाते हैं?” अवनि ने आश्चर्य से पूछा। “ये तो पहाड़ हैं, यहाँ तो ठंडक होती है।” हैंडपंप से पानी निकाल रही एक औरत छाता लगाए थी। बाजार में जा रहे अनेक लोग धूप से बचने के लिए भी छाता लगाए थे। वे बाहर से आए पर्यटक नहीं थे, बल्कि स्थानीय लोग थे।

वातानुकूलित गाड़ी में तो पता ही नहीं चला कि बाहर कितनी गर्मी है। होटल पहुँचते ही वेटर ने स्टैंडिंग फैन चालू कर दिया। बोला, “साहब छत का पंखा नहीं है, क्योंकि जब होटल बना था तब इतनी गर्मी नहीं पड़ती थी। अब तो पहाड़ गर्म हो गए।”

अवनि तुरंत टी.वी. ऑन करने लगी तो अथर्व ने रोका, “अरे इतनी दूर टी.वी. देखने थोड़ी न आए हैं। यह तो दिल्ली में ही देख सकते थे। आओ बाहर चलते हैं।” रिसेप्शन के पास से एक पगडंडी व्यू प्वाइंट को जाती थी। वहाँ का दृश्य तो अति सुंदर था। दूर-दूर तक करीब पाँच पहाड़ियों की शृंखलाएँ एक के पीछे एक दिख रही थीं। सामने की पहाड़ी पर पट्टी-पट्टी जैसे खेत थे। ऊँचे-ऊँचे देवदार के वृक्ष थे। एक वृक्ष पर अत्यंत सुंदर लाल फूल थे। वहाँ काम कर रहे एक व्यक्ति, जो कि माली था, ने बताया कि यह बुरांश का फूल है, जिससे शरबत बनता है। अथर्व ने माली से पूछा कि वह प्लास्टिक की बोतलों और नमकीन के खाली पैकेटों का ढेर क्यों लगा रहा है। माली ने बताया कि अनेक लोग इन्हें रास्ते के दोनों तरफ़ फेंक जाते हैं, इसलिए अब पहाड़ों में अधिकतर लोग इन्हें इकट्ठा कर जला देते हैं।

जब अथर्व ने यह बात पापा-मम्मी को बताई तो उन्होंने तय किया कि हम होटल के आर.ओ. का पानी पिएँगे और प्लास्टिक की बोतल के कूड़े को कम करेंगे। घर पर भी तो आर.ओ. फिल्टर का ही पानी पीते हैं।

• • •

समीप के कसार देवी मंदिर की चढ़ाई में सब हाँफ गए, और मेहनत करने से सबके चेहरे गुलाबी हो गए। पहाड़ की स्वच्छ हवा का आनंद ही अलग था। दूर-दूर तक घाटियाँ, धुँधले पहाड़ दिख रहे थे, परंतु प्रख्यात नंदा देवी, नंदा कोट और चौखम्बा की बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ तो जैसे अंतर्धान हो गई थीं। सभी बहुत मायूस हो गए। पुजारीजी ने कहा, "इस बार तो दो महीने से बर्फ की हिमालय की शृंखला नहीं दिखी। बादल तो कभी-कभी होते हैं, परंतु असंख्य स्थानों पर कूड़ा जलाने व कुछ लापरवाह लोगों की वजह से जंगल में आग लग जाने के कारण अब तो सदैव धुंध-सी रहती है।"

पुजारीजी बोले, “मैंने 50 वर्षों में बहुत परिवर्तन देखा है। इस पहाड़ी क्षेत्र कुमाऊँ का नाम ‘कुर्मावत’ यानी ‘कुर्मावतार’–ईश्वर के कछुए के अवतार से मिला है। मनुष्य के लालच और ध्यान न देने से यह देव भूमि नष्ट होती जा रही है।”

होटल पहुँच कर मम्मी ने कहा, “अब सुबह तक के लिए सब अपना मोबाइल अलग रख देंगे। हम आपस में बात करने के स्थान पर लगातार अन्य लोगों के व्हाट्स एप मेसेज और फेसबुक आदि में लगे रहते हैं। धीरे-धीरे बात करने की आदत कम होती जा रही है। बीता हुआ समय कभी

वापस नहीं आता। बहुत जल्दी तुम लोग बड़े होकर नौकरी करने चले जाओगे और तब अफसोस होगा।”

सबने मोबाइल अलग रख दिए। पहले अंत्याक्षरी खेली और फिर शतरंज। सबको खूब मज़ा आया। मम्मी ने बताया कि बचपन में वह भी शतरंज खेलती थीं। शतरंज खेलने से दिमाग तेज़ होता है, क्योंकि हर चाल के भविष्य के लिए अलग-अलग परिणाम पर सोचना पड़ता है। जीवन तो

यही है, हर कार्य का क्या नतीजा होगा और हमारे लिए बाद में भी क्या सबसे अच्छा रहेगा, यह विचारना चाहिए।

अगले दिन बाज़ार में खाने के बाद कुमाऊँ की प्रसिद्ध मिठाई-बाल मिठाई, जिसमें चॉकलेट जैसी मिठाई पर सफेद चीनी के दाने चिपका दिए जाते हैं, खाई गई। दुकानवाला 'सुगोडी'--पत्ते में बंधी मावा, नारियल और इलायची की मिठाई चखने का आग्रह करने लगा। अथर्व ने मना किया, "मैंने कभी नहीं खाई है। मैं नहीं खाऊँगा।" पापा ने कहा, "थोड़ा-सा तो चखो। जीवन में कुछ नया तो ट्राई करना पड़ता है, नहीं तो सब नीरस और पुराना लगेगा। नई चीज़, नए विचार में ही तो परिवर्तन है, विकास है, दिलचस्प है।"

यादगार छुट्टी बिताकर सब वापस दिल्ली की तरफ लौट रहे थे। बच्चे थक कर सो गए थे। बीच में पड़े बैग को खोलने पर मम्मी की आँखों में खुशी के आँसू आ गए। बैग में बच्चों ने अपने चॉकलेट, बिस्कुट, नमकीन के खाली रैपर और पहले दिन उपयोग की गई दो पानी की खाली बोतलें रखी थीं। पहाड़ों को सहेजने के लिए बच्चों ने जीवन में अपना पहला कदम जो उठा लिया था।

• • •

पॉलिथीन का प्रलय

"माँ! माँ! जल्दी चलो। यामा गैया की तबीयत बहुत ख़राब है, उसे जानवरों के अस्पताल ले जाया जा रहा है।" यामा असहाय पड़ी थी, उसकी कजरारी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी। उसका बछड़ा रामू बेचैन होकर अपनी रस्सी को तोड़ यामा के पास जाने की कोशिश कर रहा था।

नीम के पेड़ पर बैठा कौओं का समूह नीचे देख रहा था। साँवरे कौए ने कहा, "सब तरफ़ पॉलिथीन की थैलियाँ पड़ी रहती हैं, जो गाय खा लेती हैं। इसके अलावा लोग बचा हुआ खाने का सामान भी पॉलिथीन में बाँध कर फेंक देते हैं, उनको कूड़ेदान में भी नहीं डालते। पिछले महीने पड़ोस के

मोहल्ले में लक्ष्मी गाय के पेट से 20 किलो पॉलिथीन निकाला गया, बड़ी मुश्किल से प्राण बचे। लगता है यामा दीदी का भी ऑपरेशन करना होगा।"

राधा की मम्मी ने यामा के इलाज के लिए पैसे दिए। घर वापस आई तो राधा के नाना जो गाँव से आए हुए थे बोले, "अब तो यह समस्या गाँवों में भी हो गई है। चारों तरफ़ पॉलिथीन की पन्नियाँ पड़ी रहती हैं–नाली में, खेतों में, खाली ज़मीन पर, सड़क के किनारे। जहाँ पॉलिथीन ज़मीन में दब जाती है वहाँ की उपजाऊ शक्ति कम हो जाती है। वैसे ही खाने के लिए आबादी बढ़ रही है और कृषि योग्य भूमि कम हो रही है।"

राधा कूद कर नाना की गोदी में बैठ गई "नाना पॉलिथीन का जीवन कितना है?" दादा ने गहरी साँस ली, "कहते हैं 500 से 1000 साल। इसे नष्ट करना असंभव है, जलाने पर विषैली गैस निकलती है, जो हवा में मिल जाती है और साँस के माध्यम से हम सबके अंदर चली जाती है।"

नानी कृष्ण भगवान की मूर्ति को नए कपड़े पहना रही थीं और बड़बड़ा रही थीं, "अब तो मंदिर में भी शंकरजी पर दूध चढ़ाकर लोग खाली थैली वहीं फेंक देते हैं, बाहर रखे डिब्बे में नहीं डालते। अरे! भगवान के पास तो कूड़ा मत फेंको। यह तो ईश्वर का अपमान है। सच्चे मन और कर्म दोनों से ही तो ईश्वर प्रसन्न होते हैं।"

• • •

रातभर खूब बरसात हुई। अगले दिन सुबह राधा खुशी-खुशी स्कूल जाने के लिए यूनिफॉर्म पहन रही थी कि नानी बोलीं, "राधा आज स्कूल नहीं जा सकती। गेट के बाहर सड़क पर बहुत पानी भरा है, गाड़ी भी फँस सकती है।" राधा ने बाहर जाकर देखा तो सड़क पर करीब दो फुट पानी था। पानी में ढेरों पॉलिथीन की थैलियाँ, डिस्पोज़ेबल प्लेटें, प्लास्टिक के गिलास, कागज़, कुछ कपड़ों के टुकड़े तैर रहे थे।

राधा नाना को गेट तक ले गई, “चलिए नाना बाहर बाढ़ आ गई है।” नाना उसके भोलेपन पर मुस्कराए और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले, “राधा बाढ़ तो प्राकृतिक कारणों से आती है, यह तो जलभराव है। देखो पानी बह नहीं रहा, इसका मतलब है कि नालियाँ पॉलिथीन व अन्य फेंके गए कूड़े से जाम हो गई हैं।”

दोपहर में जल निगम के मज़दूर ने बड़ी नाली से दो बोरे पॉलिथीन व अन्य कूड़ा निकाला तो आधे घंटे में सब पानी बह गया।

मोहल्ले के बच्चे दुखी थे क्योंकि आज वे स्कूल नहीं जा पाए और उनके टेस्ट मिस हो गए। राधा के घर से दो मकान छोड़कर डॉ. अंकल की क्लीनिक थी, कोई भी मरीज़ सुबह के एप्वाइंटमेंट (Appointment) पर नहीं आ पाया। नानी की दोस्त ट्रेन से अपनी बड़ी बेटी के घर जा रही थीं, ट्रेन तो छूटी, टिकट के पैसे भी कट गए और अब अगला रिजर्वेशन पता नहीं कब मिले। नाना के मित्र माथुरजी जो वॉकर के सहारे धीरे-धीरे चलते थे, को अपने रिश्तेदार को देखने अस्पताल जाना था। उनके रिश्तेदार को कैंसर हो गया था और स्थिति गंभीर थी। सड़क पर जब तक जलभराव कम हुआ तब तक रिश्तेदार की मृत्यु की खबर आ गई।

• • •

दो दिन बाद मोहल्ले की एसोसिएशन की मीटिंग थी। राधा की अगुवाई में बच्चों ने मीटिंग में दस मिनट माँगे। सारे बड़े लोग हतप्रभ थे, बच्चों की तो खेलने, पढ़ने की उम्र है, बड़ों की बैठक में वे क्या कहेंगे। बच्चों की बात सुनने इस बार मीटिंग में बहुत बड़ी संख्या में लोग कौतूहलवश आए। राधा, शिवा और आरती ने सब बड़ों को प्रणाम कर बारी-बारी से बोला।

राधा ने कहा, “तीन दिन पहले बरसात के बाद जो जलभराव हुआ, उससे सभी लोगों का बहुत नुकसान हुआ। मेरे नानाजी ने बताया कि यह जल भराव हमारे पॉलिथीन के थैले नालियों में फेंकने से हुआ। कुछ लोग सड़क पर इन्हें फेंक देते हैं और ये हवा से उड़कर नालियों में चले जाते हैं।”

अब शिवा ने माइक सँभाला, “हाल ही में हमारे विद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस का कार्यक्रम हुआ था, जिसमें यह बताया गया कि विश्व में प्रत्येक मिनट में 10 लाख प्लास्टिक की बोतलों का उपयोग होता है। समस्या ‘सिंगल यूज़ एंड थ्रो’ (Single Use and Throw) की सोच से बढ़ती जा रही है। मुख्यतः एक बार उपयोग कर फेंका जाने वाल पॉलिथीन, जिसमें लोग कच्ची सब्जी, पका खाना, स्नैक्स, चाय आदि ले जाते हैं, डिस्पोज़ेबल प्लेटें, प्लास्टिक के चम्मच, कटलरी, स्ट्रॉ आदि का उपयोग वर्ष भर में पाँच ट्रिलियन है।”

ऊषा आंटी बोलीं, “यह ट्रिलियन क्या होता है? मुझे तो मिलियन ही मालूम था।”

माथुर अंकल ने कहा मैं बताता हूँ, उन्होंने एक कागज़ पर 5,000,000,000,000 लिखा और दिखाया सबकी आँखें फटी रह गईं। हाल में आवाज़ आई, “अरे इसमें तो 12 ज़ीरो हैं।”

आरती ने कहा, “हमें बताया गया कि समुद्रों में भी 13 मिलियन टन प्लास्टिक का कूड़ा जा रहा है। इनके छोटे-छोटे कणों से समुद्री मछलियाँ और जंतु बीमार हो रहे हैं और मर भी जाते हैं। एक कछुए की नाक के छेद में तो कोल्ड ड्रिंक की पूरी स्ट्रॉ फँस गई। यह तो पॉलिथीन का प्रलय है।”

राधा ने कहा, “हम बच्चे छोटे हैं, पर हम अपने मोहल्ले के सब लोगों से अनुरोध करना चाहते हैं कि जब तक हम बड़े होंगे, यह पॉलिथीन और कूड़े की दुनिया हो जाएगी। हमारा भी तो अपने भविष्य पर कुछ अधिकार है।”

रविन्द्र अंकल ने अपने व्हाट्स एप से नज़र उठाई, “अरे क्या कर लेंगे हम, सारी दुनिया में लोग ऐसा कर रहे हैं। सरकार ने भी तो यहाँ नियम बना दिया, पर किया क्या?”

मीरा दीदी जो विधवाओं को ट्रेनिंग देने का काम करती थीं बोलीं, “मैं चाहती हूँ कि हम सब बच्चों की सूझ-बूझ और होशियारी के लिए ताली बज़ाएँ, इन्होंने तो बड़ों को भी पीछे छोड़ दिया। अंधकार को कोसने के बज़ाय एक दिया जलाने से दूर तक प्रकाश जाता है। अँधेरे को कम करने का तो एक ही तरीका है।”

नीलम आंटी भी बोलीं, “मैं मीरा से सहमत हूँ, सरकार नियम हमारे भले के लिए बनाती है, हम सबका कर्तव्य है कि हमें उन्हें तोड़ना नहीं चाहिए और उसके अनुसार स्वयं ही कार्य करना चाहिए। जब पतली पॉलिथीन पर बैन है

तो हम क्यों उसका इस्तेमाल करते हैं? मेरी गाड़ी में तो हमेशा कपड़े के दो थैले रखे रहते हैं, इस प्रकार न तो मैं पॉलिथीन का उपयोग करती हूँ और न कूड़ा बढ़ाती हूँ। इस आदत से हर वर्ष मैं अकेले 500 से अधिक पॉलिथीन की थैलियाँ बचाती हूँ। मैं तो दुकानों से कागज़ के थैले भी नहीं लेती, क्योंकि कागज़ भी तो पेड़ों से आता है। खरीदे हुए कपड़े, जूते, खिलौने, फल, बिस्कुट, चॉकलेट, मसाले, घर का खाने का सामान, सभी अपने कपड़े के थैलों में लाती हूँ। मेरे कई जान-पहचान के लोग भी ऐसा करते हैं।"

मोहल्ले के निवासियों ने बच्चों का प्रस्ताव मंजूर कर लिया कि पॉलिथीन का उपयोग न स्वयं करेंगे और दूसरों को भी न करने के लिए प्रेरित करेंगे।

मीरा दीदी के ट्रेनिंग स्कूल से बनाए गए कपड़े के थैले हर घर में खरीदे गए। हर थैले पर लिखा था, “पॉलिथीन का उपयोग बंद”। यदि मोहल्ले में कोई पॉलिथीन में सामान लाते या कूड़े में फेंकता पाया जाता है, तो उसे हर बार 50 रुपये कमेटी को देने पड़ते। मोहल्ले में बर्थ डे, शादी, अन्य पार्टी सब में एक बार उपयोग (Single Use and Throw) के सभी सामानों का धीरे-धीरे उपयोग बंद हो गया।

• • •

एक साल बाद एसोसिएशन की मीटिंग में राधा को पर्यावरण रिपोर्ट पढ़ने का काम सौंपा गया, क्योंकि पहल तो उसने ही की थी। राधा ने बताया कि मोहल्ले के 50 घरों में पहले हर घर में प्रत्येक सप्ताह में करीब 15 पॉलिथीन सब्जी आदि लाने के लिए प्रयोग में लाई जाती थीं, यानी माह में कुल 60x50=3000 थैली और वर्ष भर में 3000x12 = 36,000, परंतु अब इन थैलियों का उपयोग नहीं हुआ। सबने प्रसन्नता से तालियाँ बजाईं, जुर्माने से भी एसोसिएशन को 7000 रुपये से भी अधिक धनराशि प्राप्त हुई, जिससे मोहल्ले के लिए जगह-जगह नए कूड़ेदान लगाने का प्रस्ताव मंजूर हुआ। रविन्द्र अंकल की आपत्ति थी कि यह काम तो नगर निगम का है, पर किसी ने ध्यान नहीं दिया, क्योंकि कूड़ेदान लगाने से फायदा तो मोहल्ले वालों को ही मिल रहा था।

सूर्यास्त का समय था। साँवरा कौआ अपने बच्चों को सोने से पहले मोहल्ले की पॉलिथीन के प्रलय के विरुद्ध किए गए सफल प्रयास की कहानी सुना रहा था। बगल की शाखा से तोते के बच्चे भी कहानी सुनकर बोले, “माँ! तभी मोहल्ला कितना साफ लगता है, बरसात में भी पानी नहीं भरता।” मिट्ठू तोतन अपनी चोंच से बच्चों का माथा सहलाते हुए बोली, “हाँ! पक्के इरादे और एकता से असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।”

• • •

सोन चिरैया

कजरी हथिनी अपनी सूँड़ से अपने दोनों बच्चों वीर और धैर्या को गुदगुदा रही थी। बच्चे अपने बड़े से कानों को तेज़ी से हिला रहे थे और घास में लोट रहे थे।

धैर्या बोली, "अम्मा! तालाब में पानी बहुत कम है। अब तो नहाने को भी नहीं मिलता।"

वीर बोला, "हाँ! सूँड़ में पानी भर कर एक-दूसरे पर छोड़ने में कितना मज़ा आता था।"

कजरी ने लंबी साँस ली और बोली, "इंसानों द्वारा तेज़ी से मकान बनाने व पेड़ काटने से अब हर साल वर्षा घटती जा रही है। तालाब भी मिट्टी जमने से उथला हो गया और ज़्यादातर वर्षा का पानी भी बह जाता है।"

श्वेता सारस जो अपनी लंबी चोंच को पंखों में छुपाकर सोने की कोशिश कर रहा था, सोचने लगा कि यदि तालाब सूख गया तो उसे भोजन के लिए मछली भी नहीं मिलेगी। घटते हुए जलस्तर से ट्रट्र मेंढ़क और अनेक मछलियों के परिवार भी चिंतित थे।

कम वर्षा के कारण पेड़ों पर भी अब घनी पत्तियाँ नहीं थीं। लंबू जिराफ ने गर्मी के महीनों में अपने बच्चों के लिए थोड़ी पत्तियाँ तोड़कर पेड़ों की सबसे ऊपर की शाखाओं पर एकत्र करनी शुरू कर दी थी।

सूर्यास्त के समय सब पशु-पक्षी तालाब पर पानी पीने आते थे। सब दिन भर के अपने किस्से सुनाते थे। दिन भर में कौन कहाँ गया, किसने क्या अदभुत देखा, क्या खाने को मिला?

उस दिन कजरी हथिनी ने सबका ध्यान आकृष्ट किया, "यदि तालाब में ऐसे ही पानी घटता गया तो अगले साल हममें से बहुत से जानवर बिना पानी के जीवित नहीं रह सकेंगे।" सुनहरी हिरन ने सहमति में सिर हिलाया। वह बोली, "मेरी नानी बताती थीं कि उनके बचपन में यह तालाब बगल

की पहाड़ी के गाँव तक था। तब गाँव में अच्छी खेती होती थी और फलों के बगीचे भी थे।"

चतुर कौआ बोला, "हम कौए अकसर खाने की तलाश में गाँव तक जाते हैं। एक बूढ़ी अम्मा हमें कुछ रोटी के टुकड़े कभी-कभी देती हैं, पर अब तो गाँव में पानी की कमी से खेती बहुत कम रह गई है। ज़्यादातर जवान लड़के तो शहर में मज़दूरी के लिए चले गए हैं। बूढ़ी अम्मा अकसर अपने बेटे को याद कर रोती है।"

कजरी ने कहा कि हम जानवर तो कहीं जा भी नहीं सकते हैं, क्योंकि शहर के बढ़ने के कारण अब जंगल तो थोड़ा-सा ही रह गया है। पहले तालाब में छोटी नदी से पानी आता था, पर उसमें भी अब बरसात में ही पानी आता है।

मिट्ठू तोता बोला, "नदी में जो थोड़ा पानी रहता भी है, वह पहाड़ी पर बने नए होटल में ले लिया जाता है। मेरी मौसी का परिवार तो होटल के पेड़ों में रहने चला गया है। सुना है वहाँ इंसानों के तैरने के लिए कई स्वीमिंग पूल बनाए गए हैं। कल्लू लंगूर और अनेक चिड़ियों के परिवार पूल के समीप के पेड़ों में रहने लगे हैं, क्योंकि पहाड़ी पर अब कहीं भी पीने के लिए भी पानी नहीं है। वे छिपकर पानी पी लेते हैं।"

चुन्नू बंदर बोला, "हम पानी के लिए इंसान की बस्ती में जाते हैं तो छिपकर नल से थोड़ा पानी पी पाते हैं। अकसर तो बच्चे हम पर पत्थर फेंकते हैं।"

कजरी ने कहा, "हमें मिलकर भविष्य के लिए कोई हल ढूँढ़ना है। किसी के पास कोई सुझाव है?" कल्लू भालू बोला, "चिड़ियाँ तो फिर भी होटल व गाँव के पेड़ों में जा सकती हैं, पर हम जानवरों को तो यहीं रहना है। वैसे भी समस्या का सामना करने से ही रास्ता निकलता है।"

चतुर कौए ने सुझाव दिया कि अगर हम बरसात से पहले तालाब को गहरा कर लें तो ज्यादा पानी एकत्र हो सकेगा।

अनेक पशु-पक्षी यह बात सुन कर हँसने लगे। कजरी ने सबको चुप कराया कि मज़ाक बनाने से कुछ नहीं होगा। जीवन में किसी भी लक्ष्य को असंभव मानकर प्रयास नहीं छोड़ना चाहिए।

पशु-पक्षियों ने अलग-अलग टीम बनाई। सबके काम बँटे थे और सबके ही कार्य महत्वपूर्ण थे।

श्वेता सारस के परिवार ने तालाब के चारों ओर लंबी चोंच से लकीरें खींची जहाँ तालाब को खोदा जाना था। चुन्नू बंदर, कल्लू भालू के परिवार रोज़ सूरज निकलने के बाद से मिट्‌टी खोदने का काम करते। उन्होंने पड़ोस के जंगल से अपने अनेक रिश्तेदारों को भी बुला लिया। जब वे थक जाते तो यामा कोयल, बुलबुल और अनेक चिड़ियाँ उन्हें गाने सुनाकर उनकी

थकान मिटातीं। लंबू जिराफ, दूर-दूर तक जाकर उनके लिए पेड़ों की ऊँची शाखाओं पर बचे फल लेकर आता। सुनहरी हिरन व उसके बच्चे रात में जाकर गाँव के बाहर फेंकी हुई खाली बोरियों में खोदी हुई मिट्टी के सूखने पर उसे भर देते और उन्हें एक तरफ अलग रख देते।

डेढ़ महीने के अथक परिश्रम के बाद सब थक गए थे। वर्षा में अब केवल पंद्रह दिन रह गए थे। कल्लू भालू ने कहा, "अब और मेहनत नहीं हो सकती। हमारे भाग्य में यह ही लिखा है कि हम पानी के लिए तरसें।"

बुद्धिमान कछुआ पानी से निकलकर चट्टान पर बैठकर सबको संबोधित करने लगा, "मेरी उम्र सौ साल है। मैंने तुम सब से ज़्यादा दुनिया देखी है। अकसर हम लक्ष्य के बहुत करीब होने पर हिम्मत हार जाते हैं। तुम सब आँखें बंद करो और कल्पना करो कि तालाब दूर-दूर तक पानी से लबालब भरा है। तालाब के किनारे रंग-बिरंगे फूल हैं, पेड़ों पर घनी पत्तियाँ व अनेक प्रकार के फल हैं। पानी स्वच्छ व ठंडा है। हवा से पानी की जल सतह पर अनेक आकार बन रहे हैं और उगते हुए सूर्य की किरणों में सुनहरे पानी का तालाब अत्यंत सुंदर लग रहा है। पीने में पानी का स्वाद इतना अच्छा है कि लगता है अमृत पी रहे हों।"

सभी जानवरों ने आँखें खोलीं और दुगने उत्साह से अपना-अपना कार्य करना शुरू कर दिया।

दो सप्ताह में तालाब बहुत गहरा हो गया था। खोदी गई मिट्टी की बोरियों को हाथियों ने कई कतार में सूखी नदी के बीच खाई खोद कर उसमें लगा दिया, जिससे कि वर्षा का कुछ पानी रुक सके।

तालाब के किनारों पर श्वेता सारस के परिवार ने अपनी लंबी चोंच से पतली क्यारियाँ बना दीं। बुलबुल, मैना, तोतों और कौओं ने उनमें अनेक

प्रकार के फलों के बीज बो दिए। वीर और धैर्या अन्य हाथी के बच्चों के साथ सूँड़ से रोज उनमें थोड़ा पानी डालते।

"मानसून आ गया।" टी.वी. पर यह समाचार सुनते ही सुनहरी हिरन गाँव से जंगल में अपने साथियों को यह खुशखबरी देने पहुँची।

अगले दिन आसमान में इतने काले बादल थे कि दिन में ही अँधेरा हो गया। बिजली कड़कने लगी, पर आज उसकी आवाज से जानवरों व पक्षियों को डर नहीं लगा। उसका अर्थ था कि खूब झमाझम बरसात होगी। जैसे ही पानी बरसना शुरू हुआ सब चिड़ियाँ ज़ोर-ज़ोर से गाने लगीं, कजरी ने अपने बच्चों, मुन्नू बंदर व चतुर कौए को अपने ऊपर बिठा लिया और अपनी सूँड़ से इंद्र देवता को प्रणाम किया।

कुछ ही दिनों में तालाब में दूर-दूर तक पानी भर गया। चारों तरफ बीज़ों से छोटे-छोटे पौधे निकल आए। इस बार बोरों से बनाए गए बाँध से नदी में बरसात बाद भी महीनों तक पानी रहा।

शाम को बुद्धिमान कछुआ दादा तालाब के किनारे बैठ कर चिड़ियों, जानवरों, मेंढ़कों और मछलियों के बच्चों को प्रेरणा देने वाली कहानी सुनाते। लक्ष्य प्राप्त करने की कल्पना करो, अपने में विश्वास रखो और एकता से बड़ी-से-बड़ी मुश्किल पर विजय प्राप्त की जा सकती है-सदैव यह याद रखने की सीख देते। सभी बच्चों की नन्ही आँखों में तैरते सपने और उत्साह की चमक ही उनकी दौलत थी।

चिरैया तालाब का नाम अब 'सोन चिरैया' तालाब हो गया। मनुष्यों में सोने को सबसे कीमती माना जाता है, परंतु पशु-पक्षियों के लिए तो तालाब का जल ही जीवन देने वाला था और सब से मूल्यवान।

नूतन ग्राफिक्स, साहिबाबाद द्वारा शब्द संयोजन तथा इंडिया ऑफसेट प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित